

तुबारि संपादकीय
टीम

◆ अस इ उम्मिद करुं लगे से कि एण बाडे रोज अन्तर सुआ मेहणु इस कम अन्तर सहयोग कते।

◆ इस तुबारि मासिक पत्रिका समाचार पत्र एक्ट अन्तर रिजिट्रि नेई भो। सिर्फ पांगी घाटि अन्तर पढ़ूं जे इ पत्रिका शुरु कियो असी।

◆ तुबारि एक अवाणिज्यिक पत्रिका भो।

◆ तुबारि पत्रिका कोई मेहणु, जनजाति, त संस्कृति गलती कहेण जे नेई छपाण लगे। अगर कोई ई सोचता बि त अस जिम्मेवार नेई।

◆ छपाणे पेहले सोब आर्टिकल दुई टाई पांगेई मेहणु हरालो असे। इ त खुलि बोक असी कि पेहली वार पांगवाडी लिखणे सुआ सुशकिल भुन्ती त गलती बि भुन्ती। अगर कोई लिखणे गलती असी त असी जे जरूर बोले। त अस तसे हारे संस्करण पुठ ठीक करणे कोशिश कते।

◆ आर्टिकल ना मिएल, या घाटि मेहणु के मदद ना मिएल त तुबारि पत्रिका कदि बि बंद भुई सकती।

◆ कोई चीज छपां असी या नेई छपां जे तुबारि संपादकीय टीम पुरा अधिकार असा।

◆ अस किलाड केन्द्रीय पुस्तकालय, त बजार राखे ठेके भेएडे हरिरामे दुकान अन्तर तुबारि ड्रॉप बॉक्स पुठ बि अपु सुझाव त आर्टिकलस रखूं जे सुविधा कियो असी।

◆ अस सोबी पांगेई मेहणु जे हात जोड कइ निवेदन कते कि, तुस बि कोई अच्छा आर्टिकल, पुराणी या नोवी कथा, कहावत, कविता, त नोवे घीत (पंगवाडी अन्तर) लिख कइ छपां जे हेंन दिए।

तुबारि संपादकीय टीम

9418431531

9418429574

9418329200

9418411199

9418904168

9418721336



मने बोक

बबीता, गां चौकी

यक रोज अउं बाहर ईहाणि खड़-खड़ बिशो थी। मेई अपु चहोरो कना हेरु गिणे चुणे बुटे त शुण्णा जंगल। अउं अपु मन अन्तर सोचुण लगी कि हें जिन्दगी बि कति अजीब नेई ना? विज्ञान बोता शरीरे तागती लिए इ खए, ओ खए, विटामिन खए, कैल्शियम खए। फिर बोता जे खेईतु, से लहू जोई मिड कइ शरीरे जरूरत पूरी कतु। जी-जी शरीर बोडींता तीं-तीं जरूरत बि बदलींती घेन्ती। विज्ञान त ई बि बोता कि लहू यक गाड़ी ई असु जे हर स्टेशन पुठ घुमतु। अपु स्टेशन ऐण पुठ जे उतरण चाहांता से उतरता, जे चढ़ण चाहांता से चढ़ता। होर केहि बिशोरे रेहि घेन्ते। तिहाणि लहू बि हें शरीर अन्तर हर जगाई विटामिन, प्रोटीन त खाणे अवयव पुजांता।



विज्ञान कति बोडी बोक असी समझांता, पर विज्ञान मन त आत्मा भूल गा। शरीर त खांजे त पूर मेअण लगे असु तागती लिए, बोडीणे लिए। फिर बि जान नेई, सुन्दरता नेई किस कि मन त आत्मा खुश नेई। शरीरे ई आत्मा बि किछ चीजी के जरूरत भुन्ती। आत्माई जरूरत भो रिश्ता, चाहे कोइ बि बझाह भोल, जपल रिश्ते टूटते त घा आत्मा पुठ लगता। तसे असर शरीर पुठ बि केता। सच्यु असु कि रिश्ती केआं बध कोइ किछ नेई। तिहाणि हें ओत-कोत बड़ जंगल अन्तर बोडे मठइ बुटे चाहे से दियारे, चीऐ, भजे, कलारे, थणगोली, थरो, वेदे, कलारे या शधील-बखुरु भो, ए सोब बि मठइ-बोडे यक टबरे ई भुन्ते। अन्हि अन्तर बि यक रिश्ता बणो भुन्ता। अगर अन्हि अन्तर अस बोडे-बोडे सोब बुटे कठ छऊ त मठ-मठ बच्चे वेसहारे रेहि घेन्ते। त अन्हि बि अपु टबरे केआं बिछड़णे गम भुन्ता। काश, कऊं ऐन्के बारे सोचेल समझेल कि अन्हि बि दर्दी एहसास भुन्ता। अगर एन्के ओत-कोत बड़ बोडे-बोडे बुटे कठ छड़ेल त मठ-मठ बुटे दुखी त अकेले भोई घेन्ते। जंगले हारे छोटे-मोटे बुटे नीलियार त हर चीजी बारे बि असी अपु ध्यान देण जरूरी असा।

चाहे बस्त भो, बरशाड भो, शैर भो या हियुंत भो, मौसम चाहे कोई बि भोल। चहोरो कना नीलु-नीलु घास त अब्बल - अब्बल फियुड त फियुड के अब्बल मुशकी बाडी बियार कति खरी लगतीथ। भ्यागे



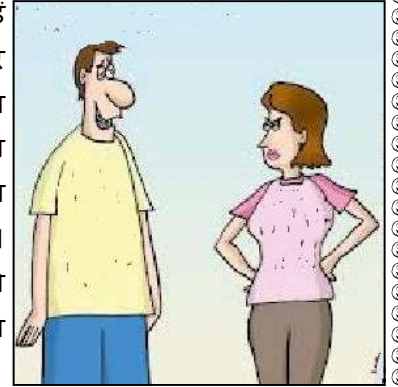
जपल अस खड़ींतेथ त नीलु-नीलु घास नीले-नीले बुटी के पन्ने त ठन्हि-ठन्हि बियार कत अबल लगतीथ। भ्यागे जिखेई दिस निसतुथ त ई लगतुथ कि जी चहोरो कना सुन्ना-चान्नी चमको असा। भ्यागे-भ्यागे चहोरो कना चड़ी-चखुरु के चु-चुआट शुण कइ आत्मा खुश भोई घेन्तीथ। अब हेरे ना जंगल, ना चड़ी-चखुरु के चु-चुआट। बस असु त सिर्फ चहोरो कना जन-पटास त गन्द खुरको असा। अब बियार लगती त चहोरो कना किछ ना सिर्फ भसरोड खरकता। अब मेहणु जंगल कटणे तीं तवाहि कियो असी। जे मेहणु के हथ लगु चाहे से थाण, थड़गोलि, ची, दियार, भज, कलर, वेद या शधील बखुर भो या कोढि बि बुटा भो अपु मतलबे लिए सद कटणे डोल कियो असी। अब मेहणु अति तवाहि करिणि लइ छओ असी कि अपु गभुरु के या तेन्के एणे बाडे पीढी भविष्य बारे सोचुण लगेरे नेई। जेठि जंगल अन्तर मेहणु के यक बुटा लगे असा तेठि मेहणु अपु फायदे लिए दुई-टाई बुटे कट छओ असे। जंगल के जंगल शुन्ने भुण लगे असे। आधा जंगल त सड़क बणणे बेलि शुन्निए जे आधी कसर रेहि गओ थी से असी मेहणु पूरी करीण लओ असी। पर हें मेहणु के मन अन्तर धिक बि ख्याल नेई अओ कि जेठि

असी दुई-टाई बुटे कट छडे पर यक आधा बुटा त अस बि लाई सकते। पर ना, ई एस कना अस सोचते नऊं, किस कि ई सोचुण जे असी केई टेमे नेई अपु मतलब हल करण केआं। अब किछ बि खरु नेई लगण लगो। फिर बि मेहणु जीण लगो असे। दुखी बि असे पर सच्चे बि बोते कि वक्त सोब ठीक कइ छता। पर तेस वक्ते ख्याल एस मेहणु वक्ते रहेते करियल ता। मेई बि मठड़ियार स्कूल पढो थियु त आज-कल हर स्कूली गभुरु पढते कि 'बुटी जोई जीवन असा। बुटी केआं असी साफ-शुधि बियार मेती, जेस जे 'ऑक्सीजन' बोते। हें ओत-कोत बड़ जे कुस्तरी बियार भुन्ती (मतलब कार्बन डाइऑक्साइड) तेस बुटे नी छते। बुटी के बेलि मेघे लगती। बुटी के बेलि धरती अन्तरा हर चीज मेती। जी खाने चीज, दवा, कठोड़ त होर बि केहि चीजे बुटी के बेलि मेती। आज- कल त मठ-मठ गभुरु बि जाणते कि कागज बि बुटी केआं मेता। बुटी के नीलियार हेर कइ हें टीर खुश भोई घेन्ते।' पर अस मेहणु बि कत दोगले असे। मठड़ियार किछ होरे त बोडी कइ किछ होरे बण घेन्ते। अब बि में तइफते दिल केआं यके अवाज ऐन्ती। बितो बक्त अन्तर वापस घेण जे दिल कता, फिर सेईए खरे दिन जीणे दिल कता.....।

धाणि जुएली कथा

Source: Internet

यक गौ दुई धाणि जुएली थिए। से रोज झगडिन्तेथ त फिर बण घेन्तेथ। से दुहे जेई जत बि झगडिन्तेथ पर सुआ रोज तकर यक होरी जुए बोक करणे सिवा रहिए ना सकतेथ। पर यक रोज भु ई कि केसे बोक पतोई से दुहे जेई खरे झगडि गा त तेन्हि दुही अपफ बुछ बोके ना की। टाई चोउर रोज तेन्हि अपफ बुछ कोई बोके ना की। त धाणि परेशान भोई गा किस कि तस अपु कमे लिए जहाज पुठ दूर घेण थिउ। जहाज भ्यागे चोउर बज घेन्ताथ। पर तसे उंघ अठ बज तकर ना बिझतीथ। से सोचुण लगा 'अब मोउं की करुण? मोउं रोज के भ्यागे जुएली खड़ेरती। पर एचेल अस अपफ बुछ बोके न कते।' तोउं से सोचुण लगा कि अउं कागज पुठ लिख कइ असे शरान्त छइ छता कि 'मोउं भ्यागे खड़ेर! चोउ बज मोउं जहाज पुठ घेण असु।' तोउं से चिठ लिख कइ अपु जुएली शरान्त छई छता त उंघ घेन्ता।



भ्यागे जिखेई से खडिन्ता, टेम हेरता त आठ बज गो भुन्ते। तस सुआ लेहर एन्ती। से सोचता 'आज अउं अपु जुएली भ्यागे ई दुई शिचाणता। ए अपणे आप बोडी बणती। एन अउं भ्यागे ना खड़ेरा। मउं अपु कमे लिये घेणे जरुरी थिउ। अब मोउं की करुण?' त से इए त वोर हेरण लगा कि ए को गई। तस लेहरीए पुठ किछ केण बि ना थिउ लगो। तोउं अजगता तसे नजर अपु सरान्तोटि भैड गई। तेठि यक कागज थिआ। तेन से कागज टाता त हेरा। तस पुठ लिखो थिउ 'चोउ बज गा, खड भो!' तस पढ कइ से खजड भोई गा त तसे लेहर ठनी गई।

से अपु मन अन्तर सोचुण लगा, 'बगेर सोचे समझे लेहर ना किढिण। अगर अउं अपु जुएली जुए बोक कताथ कि मोउं भ्यागे चोउर बज खड़ेरिण दिए, त से मोउं खड़ेर छतीथ। पर में अपु जिदि बझाई जुए लिख कइ तसे शरान्त छोउ। सोचु कि अ मोउं जुए अगरोरिआ बोक करियेल। पर ई ना भो। तेन बि लिख कइ में शरान्त छई छो। असि जे कम अपफ ना करुण भो, होरी केआं करण चहन्ते। पर ई ना सोचते कि जे कम असि केआं ना करिन्तु, से अस होरी केआं की कराई सकते।'।

ई अपु कुवा जे बोलुण लगो असी.....

बबिता, चौकी

राजु! दुकान पुटा गरम मसाला घिन आई!



ईया! मेई सोभि दुकानी पुठ मसाले छूड कइ हेरे। पर कोई बि मसाला गरम नेई।



ADVERTISEMENT/ BEST WISHES FOR MARRIAGES, BIRTHDAYS, RETIREMENTS Etc. Please 9418429574

सोभि पंगेई मेहणु के छने-अरे कते हियुंत मेहना लगो असा त सुआ ठन्यारी असी। तिहार बि लगो असे त सुआ अराख न पिए। अपु कुई-चीड़ी त सकि नति जोइ तिहार मनाए। सुआ अराख पी कइ अपु सेहद खराब न करें।

